हरति घोषणा-पत्र, 2024

चर्चा में क्यों

हाल ही में **पीपुल फॉर** अरावली समूह ने राज्य में बढ़ते पर्यावरणीय संकट के जवाब में '**हरयिाणा हरति घोषण-पत्र 2024 (हरयिाणा ग्रीन मेनफिस्टो)**' के वकिास की पहल की।

मुख्य बदि

- **ग्रीन मेनफिस्टो:** यह दस्तावेज़ एक अद्वतीय भागीदारी अभ्यास के बाद तैयार कयिा गया था, जसिमें वधिानसभा चुनावों से पहले हरयिाणा के **17 ज़लिों के ग्रामीण और शहरी हतिधारकों** से इनपुट एकत्र कयि गए थे।
  - पारस्थितिकिी, कृषि, शहरी नयिोजन और टकिाऊ वास्तुकला के वशिषज्ञों ने हरयिाणा के लयि हरति दृष्टकिोण को आकार देने में योगदान दयिा।
- **हरति घोषणा-पत्र में प्रमुख मांगे:**
  - वनिाशकारी गतविधियिों और वाणज्यिकि परयिोजनाओं पर रोक लगाने के लयि अरावली **तथा** शवािलकि को कानूनी रूप से "critical ecological zones अर्थात् महत्त्वपूर्ण पारस्थितिकि क्षेत्र" के रूप में नामति कयिा जाना चाहयि।
  - शेष पहाड़ियों को संरक्षति करने के लयि **वैकल्पकि नरि्माण सामग्री** के उपयोग को बढ़ावा देना चाहयि।
  - महेंद्रगढ़ ज़लि को **"पहाड़ी डारक ज़ोन"** घोषति कयिा जाए तथा भूजल स्तर (1,500-2,000 फीट) के अत्यधकि नम्नि स्तर के कारण सभी **खनन और पत्थर-तोड़ने के कार्य** बंद कयि जाने चाहयि।
  - राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) में खनन को **वैध बनाने हेतु** सर्वोच्च न्यायालय में राज्य की अपील वापस ली जाए।
  - **पाली के बंधवाड़ी और पुराने सोहना-अलवर रोड पर ITI कॉलोनी के पास** लैंडफलि हटाए जाए।
  - नूह ज़लि के **भविाड़ी, खोरी खुर्द और अन्य गाँवों** में औद्योगकि इकाइयों से नकिलने वाले रासायनकि अपशष्टि के अवैध डंपगि तथा जलाने पर रोक लगाई जाए।
  - जनि ग्रामीणों की भूमि इन गतविधियिों से प्रभावति हुई है, उन्हें मुआवज़ा और **गुणवत्तापूर्ण कृषि भूमि** उपलब्ध कराएं।
- **वन संरक्षण की मांग:**
  - पंजाब भूमि संरक्षण अधनियिम (PLPA), 1900 के अंतर्गत गैर-अधसिूचति वनों को "Deemed Forests अर्थात् मान्य वन" के रूप में **शामलि करके सभी वनों** को कानूनी संरक्षण प्रदान करना।
  - **दल्लिी वृक्ष संरक्षण अधनियिम, 1994 के समान हरयिाणा के लयि भी वृक्ष अधनियिम बनाया जाए।**
  - सभी खुले प्राकृतकि पारस्थितिकि तंत्रों (Open Natural Ecosystems- ONE) को, जैसे कि **फतेहाबाद ज़लि** में काले हरिणों के **प्राकृतकि आवास** को, संरक्षण या सामुदायकि रज़िर्व घोषति कयिा जाए।
  - **हरयिाणा के वन** (ONE) को भारत के बंजर भूमि एटलस से हटाया जाए, जसिमें इन पारस्थितिकिी प्रणालयिों को कृषि या औद्योगकि उपयोग के लयि '**अनुत्पादक**' भूमि के रूप में वर्गीकृत कयिा गया है।
  - **चार वर्षों के भीतर** हरयिाणा के वन एवं वृक्ष आवरण **को 10%** तक बढ़ाने के लयि कार्य योजना लागू करना।
  - **लेसोड़ा, खेजड़ी, इंद्रोक और जाल** जैसी हरयिाणा की पारंपरकि वृक्ष प्रजातयिों को पुनः लागू करना तथा जैववविधिता से भरपूर स्थानों के नरि्माण हेतु पारस्थितिकिीय रूप से सही तरीके से देशी वृक्षारोपण (ऊँचे वृक्ष, भूमगित वृक्ष, झाड़ियाँ, लताएँ, घास) को बढ़ावा देना।
- **खाद्य सुरक्षा की मांग:**
  - जलवायु परविर्तन अनुकूलन की प्रमुख रणनीति के रूप में फसल ववििधीकरण को बढ़ावा देना।
  - केंद्र द्वारा घोषति न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर कसिानों द्वारा उगाई गई **प्रत्येक फसल की गारंटीकृत खरीद** सुनश्चिति करना।
  - मृदा स्वास्थ्य में सुधार लाने वाली नेचुरल फार्मगि (Natural Farming) पद्धतयिों को प्रोत्साहति करना।
  - **पछिले 15 वर्षों** से कुछ गाँवों में कसिानों को शक्षिति करने वाले '**कीट पाठशालाओं**' **(कीट वद्यिालयों)** को **सभी ज़लिों** में वस्तिारति करना। ये वद्यिालय शाकाहारी और मांसाहारी कीटों के बीच संतुलन सखिाते हैं, जसिसे कीटनाशकों के छड़िकाव की ज़रूरत कम हो जाती है।

अरावली पर्वत शृंखला

- अरावली पृथ्वी पर **सबसे पुराना** मोड़दार पर्वत है।
- यह **गुजरात से दल्लिी** (राजस्थान और हरयिाणा से होकर) **तक 800 कलिोमीटर** से अधकि वस्तिृत है।

- अरावली पर्वतमाला की सबसे ऊँची चोटी **माउंट आबू पर स्थित गुरु शिखर** है।

जलवायु पर प्रभाव:

- अरावली पर्वतमाला उत्तर-पश्चिम भारत और उससे आगे की जलवायु पर प्रभाव डालती है।
- मानसून के दौरान, पर्वत शृंखला मानसून के बादलों को शिमला और नैनीताल की ओर पूर्व की ओर ले जाती है, जिससे उप-हिमालयी नदियों को पोषण मिलता है तथा उत्तर भारतीय मैदानों को पोषण मिलता है।
- सर्दियों के महीनों में यह उपजाऊ जलोढ़ नदी घाटियों (पैरा-सिंधु और गंगा) को मध्य एशिया से आने वाली ठंडी पश्चिमी पवनों के आक्रमण से बचाती है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/green-manifesto-2024